वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वैद प्रकाश

मासिक पत्र (6-7 प्रतिमाह) मूल्यः ५ रुपये (३०/-वार्षिक) अप्रैल २०१६

कुल पृष्ठ संख्या २०, वजनः 40 ग्राम
प्रकाशन तिथिः 4 अप्रैल 2016

अन्तःपथ

महात्मा आनन्द स्वामी की जीवनी: आनन्द रस-धारा *–राजेन्द्र 'जिज्ञासु'*	३ से ७
प्रश्नोत्तरी (सृष्टि या ब्रह्माण्ड रचना विषय)	८ से १७
साकार ईश्वर मानने वालों से प्रश्न	१७ से १८

अगर लोग केवल जरूरत पर ही आपको याद करते हैं तो बुरा मत मानिये, बल्कि गर्व कीजिये, क्योंकि "मोमबत्ती की याद तभी आती है, जब अंधकार होता है।"

मनुष्य मांस क्यों खाए?

–डॉ. वेदप्रताप वैदिक

सारी दुनिया में भारत ही ऐसा एकमात्र देश है, जिसमें करोड़ों शाकाहारी लोग रहते हैं। ये शाकाहारी लोग मांस, मछली, अंडा वगैरह नहीं खाते। वे मांसाहार नहीं करने को अपने धर्म का हिस्सा मानते हैं लेकिन अमेरिकी और यूरोपीय लोगों के मांसाहार में कोई धार्मिक बाधा नहीं है। दुनिया के मुस्लिम और बौद्ध देशों में भी मांसाहार पर कोई धार्मिक पाबंदी नहीं है। लेकिन आजकल अनेक यूरोपीय देशों और अमेरिका में लोग मांसाहार छोड़ रहे हैं, क्योंकि इन देशों की वैज्ञानिक संस्थाएं यह सिद्ध कर रही हैं कि मांसाहार मनुष्यों के शरीर के लिए हानिकारक है। वह स्वास्थ्य तो खराब करता ही है, उससे आर्थिक नुकसान भी होता है और वह पर्यावरण को हानि भी पहुँचाता है। अभी-अभी अमेरिका की राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी ने एक नया अध्ययन प्रस्तुत किया है। उसमें बताया गया है कि मांसाहार ही दुनिया के एक-चौथाई प्रदूषण का कारण है। मांसाहार के कारण लोगों की उम्र घट जाती है। उस अध्ययन के अनुसार यदि लोग मांसाहार छोड़ दें तो हर साल 51 लाख लोगों को मरने से बचाया जा सकता है। यदि लोग मांस खाना बंद कर दें तो खाने-पीने की चीज़ों से जो प्रदूषण होता है, वह 70 प्रतिशत कम हो सकता है। कसाईखानों से जो बदबू और गंदगी फैलती है, वह फल और सब्जियों से फैलने वाली गंदगी से कई गुना ज्यादा होती है। यदि लोग मांसाहार छोड़ दें तो हर साल लगभग 50 हजार करोड़ रु. की बचत हो सकती है। इतना पैसा हर साल मांसाहार से पैदा होनेवाली बीमारियों के कारण बर्बाद होता है। प्रदूषण से बचनेवाली राशि 20 हजार करोड़ से भी ज्यादा है। इस तरह से कई आंकड़े इस अध्ययन-रपट में पेश किए गए हैं। लेकिन मैं तो यह समझता हूँ कि मनुष्य के दांत और आंत को देखें तो ये दोनों मांसाहारी प्राणियों से अलग हैं। जैसे मनुष्य शाकाहार और मांसाहार दोनों कर सकता है वैसे ही सिर्फ कुत्ते, बिल्ली, मछली और चूहे ही कर सकते हैं। ज्यादातर तो जो जानवर शाकाहारी होते हैं, वे मांसाहार नहीं करते और जो मांसाहारी होते हैं, वे शाकाहार नहीं करते। बकरी मांस नहीं खाती और शेर घास नहीं खाता। मांस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन नहीं है। किसी भी धर्म में मांस खाना अनिवार्य नहीं है। ऐसा कहीं नहीं लिखा है कि जो मांस नहीं खाएगा, वह अच्छा हिंदू या अच्छा मुसलमान या अच्छा ईसाई या अच्छा सिख नहीं होगा। सभी धर्मों के मुखियाओं को चाहिए कि वे अपने अनुयायियों को जीव-हिंसा से मुक्त रखें।

वेदप्रकाश

संस्थापक : **स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द**

वर्ष ६५ अंक ९ वार्षिक मूल्य : तीस रुपये, एक प्रति ५ रुपये, अप्रैल, २०१६

सम्पा॰ **अजयकुमार** पूर्व सम्पादक : स्व॰ **स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती**

एक नई देन

महात्मा आनन्द स्वामी की जीवनी आनन्द रस-धारा

—राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदन सदन,
अबोहर—१५२११६

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द अप्रैल 2016 में अपने प्रेमियों को एक नई देन दे रहा है। इसकी इस भेंट से आर्य साहित्य में एक गौरवपूर्ण वृद्धि होगी। यह है पीयूष वर्षी महात्मा आनन्द स्वामजी जी महाराज की प्रेरणाप्रद जीवनी। आर्य साहित्य अनुरागी जिस बन्धु ने मुझे इसके लिखने के लिए विशेष अनुरोध किया उसकी उत्कट इच्छा थी कि मैं इसे कम से कम 250 पृष्ठ तक कर दूँ। वह आर्य पुरुष श्री महात्मा जी से मेरी निकटता को जानता था। उसे पता था कि महात्मा जी पर तीन सौ पृष्ठ की पुस्तक लिखना मेरे लिए कोई कठिन नहीं है परन्तु वही भाई इसे एक विशेष समारोह के लिए कुछ ही दिन में इसका प्रकाशन चाहता था। उतने दिन में तो डेढ़ सौ पृष्ठ ही लिखे जा सकते थे।

उनके समारोह तक पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था सम्भव ही नहीं थी। अब दबाब डाला कि इसके 250 पृष्ठ कर दो। तब मैंने अपनी व्यवस्तताओं के कारण इस कार्य को टाल दिया। महात्मा जी ने मार्च 22 सन् 1939 को गुलबर्गा में सत्याग्रह करके निज़ामशाही को ललकारा। आर्य सत्याग्रह हैदराबाद के उस स्मरणीय दिन के अवसर पर 87 वर्ष पश्चात् मैं इस पुस्तक का विमोचन चाहता था।

सार्वजनिक जीवन में वाद-विवाद मतभेद भी होते ही हैं। मैंने महात्मा जी की इस जीवनी को यम नियमों को-अष्टांग योग को सामने रखकर ही लिखा है। इसमें उनके जीवन के ऐसे ही प्रेरक प्रसंग एकत्र किये हैं। उनके सेवा भाव, अपरिग्रह, ईश्वर भक्ति, देश व समाज सुधार के अनूठे कार्यों, देश, धर्मानुराग, ऋषि भक्ति मुख्य रखकर ऐसी-ऐसी शिक्षाप्रद घटनायें ही एकत्र की हैं। पाठक इसे आदि से अन्त तक रोचक व प्रेरक पायेंगे। एक-एक घटना व प्रसंग की प्रामाणिकता साथ-साथ दी गई है।

समय-समय पर महात्मा जी के जो साक्षात्कार लिये उनके लिये— गये विशेष संस्मरण तथा अपने 33-34 वर्ष के लम्बे समय के महात्मा जी के मुख्य-मुख्य संस्मरण चुन-चुनकर दिये हैं। आर्य समाज के इतिहास की वे घटनायें जिनकी आज कहीं कोई चर्चा नहीं करता उन स्वर्णिम प्रेरक प्रसंगों पर प्रकाश डाला गया है यथा:—

आर्य सत्याग्रह के सब सर्वाधिकारियों का जब लाहौर रेलवे स्टेशन पर स्वागत करने के लिये जन समुद्र उमड पड़ तो भारी भीड़ में एक आर्य नेता गुम हो गया। श्री वीरेन्द्र जी ने बार-बार लाऊड स्पीकर पर उनको भीड़ में खोज कर आगे लाने की घोषणायें की। वे थे श्री महाशय खुशहालचन्द जी (महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज)। बड़े यत्न से उनकी खोज हो सकी।

स्वामी सत्याप्रकाश जी के संन्यास के पश्चात् जब पहली बार महात्मा जी प्रयाग गये तो स्वामी जी के दर्शन करने की उत्सुकता थी। आप भक्तों के साथ आर्यसमाज कटरा प्रयाग पहुंचे। महात्मा जी को आता देखकर स्वामी जी गद्गद होकर स्वागत को उठ खड़े हुए। आगे बढ़कर स्वामी जी के चरण स्पर्श करने लगे तो महात्मा जी पीछे हट गये, चरण छूने नहीं दिये। अब आनन्द स्वामी जी आपके चरण स्पर्श करने को बढ़े तो सत्यप्रकाश जी पीछे हट गये।

बस दोनों बाबों की चरण स्पर्श प्रतियोगिता देखकर दर्शक भी चकित व गद्गद हो रहे थे। यह सारा वृत्तान्त दोनों महात्माओं के मुख से सुनकर तथा एक प्रत्यक्षदर्शी श्री गौरी शंकर जी श्रीवास्तव से पूछकर फिर इस पुस्तक में प्रामाणिक वृत्तान्त लिखा है। पाठक पढ़कर झूम उठेंगे।

उत्तराखण्ड के एक समाज में एक भूतपूर्व पर्वतीय राजा रानी महात्मा जी की कथा सुनने प्रतिदिन समाज मन्दिर में आते रहे। उन पर कथा का

गहरा प्रभाव पड़ा। राजा ने समाज वालों से महात्मा को एक दिन अपने घर पर ले जाने की प्रार्थना की। महात्मा जी ने उसकी विनती स्वीकार कर ली। राजा ने समाज के प्रतिष्ठित लोगों को भी आने का निमन्त्रण दिया। दूर-दूर से पर्वतीय यात्रा पर वहाँ गये कई आर्य पुरुष भी महात्मा जी के संग राज भवन गये।

महाराजा ने एकान्त में महात्मा जी से कुछ धर्म चर्चा करने की अनुमति मांगी। वे उन्हें राज भवन के एक कक्ष में ले गये। राज रानी ने जी भर कर धर्म चर्चा की। अब विदाई का समय आया। सौ-सौ के नोटों की गड्डियाँ एक बड़े थाल मे रंखकर राज रानी ने महात्मा जी को भेंट करनी चाहीं। महात्माजी ने यह उपहार अस्वीकार कर दिया। इससे राजा व रानी उदास निराश हो गये। बहुत विनय की तो कहा, "जो मैं माँगू वही देना होगा।" अब वे सोच में पड़ गये कि न जाने यह आर्य संन्यासी क्या मांग बैठे। कहा, "सोच लो, फिर सोच लो। वही कुछ देना होगा जो मैं माँगूँ।" राज रानी बोले, "कहिये। हम वही देंगे।"

साथ आर्य भाई भी बड़े ध्यान से नोटों का थाल ठुकराते हुए अपने मुनि महात्मा को ताक रहे थे। अब महाराज बोले, "मेरी झोली में अपनी चिन्तायें डाल दो और प्रतिदिन प्रणव जप, गायत्री जप किया करें।"

पाप पुण्य व चिन्ताओं का लेन देन नहीं होता। अपनी चिन्तायें मेरी झोली में डाल दो। गायत्री जप नित्य किया करो यह तो उनकी आत्मोन्नति की एक सीख थी। राज रानी आर्य संन्यासी के महान त्याग व इस उपदेश को देख सुनकर तृप्त हो गये। भक्तों को महर्षि की एक लिङ्ग की गद्दी का ठुकराना याद आ गया। उस दिन ऋषि के शिष्य ने एक नया इतिहास रच दिया।

उनका सेवा भाव:—आपको संन्यास लिये अभी कोई बहुत समय नहीं बीता था कि किसी आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर गये। वहाँ प्रादेशिक सभा के कई उपदेशक व भजनोपदेशक भी आमंत्रित थे। वहाँ उत्सव की समाप्ति के दिन श्री पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री अकस्मात् रुग्ण हो गये। उनके औषधि उपचार की व्यवस्था की गई। महात्माजी को अपने अगले कार्यक्रम पर जाना था। आपने सब कार्यक्रम निरस्त करते हुए कहा, मैं यहीं श्री पण्डित जी की सेवा के लिये रुकूँगा। पण्डित जी के ठीक होने तक यहीं रुकूँगा। पण्डित जी के परिवार व कादियाँ आर्यसमाज को पण्डित जी

के रोग ग्रस्त होने की सूचना तक नहीं देने दी। दो चार दिन में स्वस्थ होकर पण्डित जी कादियाँ पहुँचे तो हमें आपकी रुग्णता का पता चला। कार्यकर्ताओं से इतना प्रेम और उनकी सेवा के लिए सदा तत्पर रहने का उनका स्वभाव सबके लिए एक उदाहरण है।

उनकी दूरदर्शिता उनका धर्मभावः—एक बार श्री विजयकुमार जी आर्य (श्री अजय जी के पिता जी) के पास मैं बैठा था। विजय जी ने श्री महात्मा जी की कोई चर्चा छेड़ दी। उनकी प्यारी-प्यारी बातें सुनाते हुए यह प्रसंग सुनाया कि महात्माजी ने विजय जी को मिलने के लिए बुलाया। कुछ आवश्यक बातें करके कहा, "किसी वकील से कागज़ बनवा कर लाओ और मेरे हस्ताक्षर करवा लो। मेरा साहित्य आप प्रकाशित करते आ रहे हैं। मेरा शरीर छूटने पर कोई आप को परेशान न करे। मैं सर्वाधिकार आपको देता हूँ। शरीर का क्या पता कब छूट जाये। यह महात्मा जी के निधन से कुछ समय पहले की बात है। कानों कान किसी को पता ही न चला। महात्मा जी को मृत्यु का आभास हो चुका था। उनकी कैसी ऊँची सोच थी। बहुत से विद्वानों, आर्य पुरुषों को तो मेरे से ही इस घटना का पता चला।

उनकी शान और समाज की शोभाः—जालंधर विक्रमपुरा समाज के उत्सव पर आपने संन्यास लेने की घोषणा कर दी। देश के विभाजन के घाव अभी हरे थे। समाज की बहुत क्षति हुई थी। आपके इस निर्णय से आर्यसमाज में अपूर्व उत्साह का संचार हुआ। बिना किसी निमन्त्रण के दूर-दूर से आर्य नर-नारी यमुनानगर आश्रम में समारोह में सम्मिलित होने सोत्साह पहुँच गये। काषाय वस्त्र धारण किये तो आपके अभिवादन व भिक्षा का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। पूज्य महाशय कृष्ण जी आयु में आपसे बड़े थे। महाशय चरण स्पर्श करने आगे बढ़े। अपनी पगड़ी उतारकर मान्यवर महाशय जी ने आनन्द स्वामी जी के चरणों में रखकर उनके चरणों में अपना शीश नवाकर अभिवान्दन किया। इस दृश्य को देखकर—एक आर्य नेता की श्रद्धा देखकर सब दर्शकों के नयन सजल हो गये।

"आह और वाह दो शब्द ही तो है":—सन् 1963 में हैदराबाद में आपका कैंसर का बहुत बड़ा ऑप्ररेशन हुआ। डॉक्टर सुब्बाराव जी ने पं० नरेन्द्र जी को निर्देश दिया कि इन्हें पूर्ण विश्राम चाहिये। भक्तों को मिलने जुलने भी कुछ समय नहीं देना। यही भी कहा इस ऑप्ररेशन में युवा रोगी

भी दर्द से हाय हाय करता है। न जाने यह महात्मा दर्द की लहर कैसे सहन कर लेते हैं। यह तो इस आयु में 'आह' तक न करते। महात्मा जी ने तब कहा था लोग आह कहते हैं, मैं वाह करता हूँ—हैं तो दोनों ही शब्द। यही बात आपने अजमेर के ऋषि मेला में प्रातः उपदेश में सुनाई थी। आचार्य भगवानदास जी के दोनों बड़े पुत्रों को ले कर तब मैं शोलापुर से आपका पता करने पहुँचा था। वहाँ जो पं० नरेन्द्रजी से सुना और जैसा महात्मा जी को पाया—वह सब वृत्तान्त इस पुस्तक में दिया है।

बस आर्य समाज और ऋषि के मिशन का ही ध्यान था:—महात्मा जी का सन्देश मिला। अपना कर्त्तव्य निभाने के लिए महाराज की अन्तिम वेला में पहले दिल्ली फिर जालंधर दर्शनार्थ पहुँचा। जांघ के पास से दर्द की लहर उठती थी और पैर तक आती थी। भक्तों से घिरे बैठे थे। किसी को पता नहीं था कि थोड़ी-थोड़ी देर तक महाराज टांग क्यों पसारते हैं। इस सेवक को यह जानकारी थी। मैंने पूछा, क्या बहुत दर्द होती है?

महात्मा जी बोले, यह [पैर की ओर संकेत करके] कहता है कि सत्तर वर्ष से तुम्हें देश विदेश में घुमा रहा हूँ। अब तो मेरी जान छोड़ दे। मैंने भी अब सोचा है कि चोला बदलेंगे। किसी नई माता की कोख से जन्म लेकर ऋषि के मिशन का पूरी शक्ति से कार्य करेंगे। ऋषि ऋण चुकाना है।

मैं पर्याप्त समय तक श्री चरणों में बैठा रहा। अपने पुत्र, पौत्रों की, घर परिवार में मोह की एक भी बात नहीं कही। मैं जितनी देर उनके पास रहा वे ऋषि के मिशन की—आर्यसमाज की बातें ही मुझ से करते रहे। मुझे दो कार्य सौंपे गये। एक कार्य बताया। कहा दिल्ली जाकर पता करके आओ और मुझे सूचना दो। मैं दिल्ली गया। उन्हें सूचना क्या देता? नेताओं बाबुओं की कृपा से वह कार्य कुछ भी न हो सका।

मरते दम तक उनके सामने ऋषि का मिशन था। धुन थी तो वेद-प्रचार की। प्रभु भक्ति, देश जाति की सेवा तथा ऋषि का मिशन ही उनका सर्वस्व था। वैदिक धर्म का डंका बजाते हुए वे परलोक पधारे। उनकी दिनचर्या दूसरों के लिए एक उदाहरण थी। दो बजे प्रातः ध्यान में बैठते थे। खानपान में बड़ा संयम था। अपने कार्य आप करते थे। दूसरों से सेवा कम लेते थे? उनके जीवन का आध्यात्मिक सामाजिक पक्ष अनुकरणीय है। बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। समाज इस जीवन को पढ़े, पढ़ावें और प्रकाशक को सहयोग करके धर्म लाभ प्राप्त करें।

प्रश्नोत्तरी (सृष्टि या ब्रह्माण्ड रचना विषय)

(1) **प्रश्नः**—ब्रह्माण्ड की रचना किससे हुई?
उत्तरः—ब्रह्माण्ड की रचना प्रकृति से हुई।

(2) **प्रश्नः**—ब्रह्माण्ड की रचना किस ने की?
उत्तरः—ब्रह्माण्ड की रचना निराकार ईश्वर ने की जो कि सर्वव्यापक है। कण-कण में विद्यमान है।

(3) **प्रश्नः**—साकार ईश्वर सृष्टि क्यों नहीं रच सकता?
उत्तरः—क्योंकि साकार रूप में वह प्रकृति के सूक्ष्म परमाणुओं को आपस में संयुक्त नहीं कर सकता।

(4) **प्रश्नः**—लेकिन ईश्वर तो सर्वशक्तिमान है अपनी शक्ति से वो ये भी कर सकता है।
उत्तरः—ईश्वर की शक्ति उसका गुण है न कि द्रव्य। जो गुण होता है वो उसी पदार्थ के भीतर रहता है न कि पदार्थ से बाहर निकल सकता है। तो यदि ईश्वर साकार हो तो उसका गुण उसके भीतर ही मानना होगा तो ऐसे में केवल एक ही स्थान पर खड़ा होकर पूरे ब्रह्माण्ड की रचना कैसे कर सकेगा? इससे ईश्वर अल्प शक्ति वाला सिद्ध हुआ। अतः ईश्वर निराकार है न कि साकार।

(5) **प्रश्नः**—लेकिन हम मानते हैं कि ईश्वर साकार भी है और निराकार भी।
उत्तरः—एक ही पदार्थ में दो विरोधी गुण कभी नहीं होते हैं। या तो वो साकार होगा या निराकार। अब सामने खड़ा जानवर या तो घोड़ा है या गधा। वह घोड़ा और गधा दोनों ही एक साथ नहीं हो सकता।

(6) **प्रश्नः**—ईश्वर पूरे ब्रह्माण्ड के कण-कण में विद्यमान है ये कैसे सिद्ध होता है?
उत्तरः—एक नियम है—(क्रिया वहीं पर होगा जहाँ उसका कर्ता होगा) तो पूरे ब्रह्माण्ड में कहीं कुछ न कुछ बन रहा है तो कहीं न कहीं कुछ बिगड़ रहा है। और सारे पदार्थ भी ब्रह्माण्ड में गति कर रहे हैं। तो ये सब क्रियाएँ जहाँ पर हो रही हैं वहाँ निश्चित ही कोई न कोई अति सूक्ष्म चेतन सत्ता है। जिसे हम ईश्वर कहते हैं।

(7) **प्रश्नः**—यदि ईश्वर सर्वत्र है तो क्या संसार की गंदी–गंदी वस्तुओं में भी है? जैसे मल, मूत्र, कूड़े करकट के ढेर आदि?

उत्तरः—अवश्य है क्योंकि ये जो गंदगी है वो केवल शरीर वाले को ही गंदा करती है न कि निराकार को। अब आप स्वयं सोचें कि मल मूत्र भी किसी न किसी परमाणुओं से ही बने हैं तो क्या परमाणु गंदे होते हैं? बिलकुल भी नहीं होते। बल्की जब ये आपस में मिल कर कोई जैविक पदार्थ का निर्माण करते हैं तो ये कुछ तो शरीर के लिए बेकार होते हैं जिन्हें हम गूदा द्वार या मूत्रेन्द्रीय से बाहर कर देते हैं। इसी कारण से ईश्वर सर्वत्र है। गंदगी उस चेतन के लिए गंदी नहीं है।

(8) **प्रश्नः**—ईश्वर के बिना ही ब्रह्माण्ड अपने आप ही क्यों नहीं बन गया?

उत्तरः—क्योंकि प्रकृति जड़ पदार्थ है और ईश्वर चेतन है। बिना चेतन सत्ता के जड़ पदार्थ कभी भी अपने आप गति नहीं कर सकता। इसी को न्यूटन ने अपने पहले गति नियम में कहा है:—(Every thing persists in the state of rest or of uniform motion, until and unless it is compelled by some external force to change that state—Newton's First Law of Motion) तो ये चेतन का अभिप्राय ही यहाँ External Force है

(9) **प्रश्नः**—क्यों External Force का अर्थ तो बाहरी बल है तो यहाँ पर आप चेतना का अर्थ कैसे ले सकते हो?

उत्तरः—क्योंकि बाहरी बल जो है वो किसी बल वाले के लगाए बिना संभव नहीं। तो निश्चय ही वो बल लगाने वाला मूल में चेतन ही होता है। आप एक भी उदाहरण ऐसी नहीं दे सकते जहाँ किसी जड़ पदार्थ द्वारा ही बल दिया गया हो और कोई दूसरा पदार्थ चल पड़ा हो।

(10) **प्रश्नः**—तो ईश्वर ने ये ब्रह्माण्ड प्रकृति से कैसे रचा?

उत्तरः—उससे पहले आप प्रकृति और ईश्वर को समझें।

(11) **प्रश्नः**—प्रकृति के बारे में समझाएँ।

उत्तरः—प्रकृति कहते हैं सृष्टि के मूल परमाणुओं को। जैसे किसी

वस्तु के मूल अणु को आप Atom के नाम से जानते हो। लेकिन आगे उसी Atom (अणु) के भाग करके आप Electron (ऋणावेष), Protion (धनावेष), Neutron (नाभिकीय कण), तक पहुँच जाते हो। और उससे भी आगे इन कणों को भी तोड़ते हो तो Positrons, Neutrinos, Quarks में बढ़ते जाते हो। इसी प्रकार से विभाजन करते-करते आप जाकर एक निश्चित मूल पर टिक जाओगे। और वह मूल जो परमाणु हैं जिनको आपस में जोड़-जोड़ कर बड़े-बड़े कण बनते चले गए हैं वे ही प्रकृति के परमाणु कहलाते हैं। प्रकृति के तो परमाणु होते हैं। सत्य (Positive+) रजस् (Negative-) तमस् (Neutral 0) इन तीनों को सामूहिक रूप में प्रकृति कहा जाता है।

(12) **प्रश्नः**—क्या प्रकृति नाम का कोई एक ही परमाणु नहीं है?
उत्तरः—नहीं, (सत्व, रज और तम) तीनों प्रकार के मूल कणों को सामूहिक रूप में प्रकृति कहा जाता है। कोई एक ही कण का नाम प्रकृति नहीं है।

(13) **प्रश्नः**—तो क्या सृष्टि के किसी भी पदार्थ की रचना इन प्रकृति के परमाणुओं से ही हुई है?
उत्तरः—जी अवश्य ही ऐसा हुआ है। क्योंकि सृष्टि के हर पदार्थ में तीनों ही गुण (Positive, Negative & Neutral) पाए जाते हैं।

(14) **प्रश्नः**—ये स्पष्ट कीजिए कि सृष्टि के हर पदार्थ में तीनों ही गुण होते हैं, क्योंकि जैसे Electron होता है वो तो केवल Negative ही होता है यानि के रजोगुण से युक्त तो बाकी के दो गुण उसमें कहाँ से आ सकते हैं?
उत्तरः—नहीं ऐसा नहीं है, उस ऋणावेष यानी Electron में भी तीनों गुण ही हैं। क्योंकि होता ये है कि पदार्थ में जिस गुण की प्रधानता होती है वही प्रमुख गुण उस पदार्थ का हो जाता है। तो ऐसे ही ऋणावेष में तीनों गुण सत्व रजस् और तमस् तो हैं लेकिन ऋणावेष में रजोगुण की प्रधानता है परंतु सत्वगुण और तमोगुण गौण रूप में उसमें रहते हैं। ठीक वैसे ही Proton यानी धनावेष में सत्वगुण की प्रधानता अधिक है परंतु रजोगुण और तमोगुण गौणरूप

में हैं। और ऐसे ही तीसरा कण Neutron यानी कि नाभिकीय कण में तमोगुण अधिक प्रधान रूप में है और सत्व एवं रज गौणरूप में हैं। तो ठीक ऐसे ही सृष्टि के सारे पदार्थों का निर्माण इन तीनों ही गुणों से हुआ है। पर इन गुणों की मात्रा हर एक पदार्थ में भिन्न-भिन्न है। इसीलिए सारे पदार्थ एक दूसरे से भिन्न दिखते हैं।

(15) **प्रश्नः**—तीनों गुणों को और स्पष्ट करें।

उत्तरः—सत्व गुण कहते हैं आकर्षण से युक्त को, तमोगुण निषक्रिय या मोह वाला होता है, रजोगुण होता है चंचल स्वभाव का। इसे ऐसे समझेंः—नाभिकम् (Neucleus) में जो नाभिकीय कण (Neucleus) है वो मोह रूप है क्योंकि इसमें तमोगुण की प्रधानता है। और इसी कारण से ये अणु के केन्द्र में निषक्रिय पड़ा रहता है। और जो धनावेष (Proton) है वो भी केन्द्र में है पर उसमें सत्वगुण की प्रधानता होने से वो ऋणावेष (Electron) को खींचे रहता है। क्योंकि आकर्षण उसका स्वभाव है। तीसरा जो ऋणावेष (ELectron) है उसमें रजोगुण की प्रधानता होने से संचल स्वभाव है इसीलिए वो अणु के केन्द्र नाभिकम् की परिक्रमा करता रहता है दूर-दूर को दौड़ता है।

(16) **प्रश्नः**—तो क्या सृष्टि के सारे ही पदार्थ तीनों गुणों से ही बने हैं? तो फिर सबमें विलक्षणता क्यों है! सभी एक जैसे क्यों नहीं?

उत्तरः—जी हाँ, सारे ही पदार्थ तीनों गुणों से बने हैं। क्योंकि सब पदार्थों में तीनों गुणों का परिमाण भिन्न-भिन्न है। जैसे आप उदाहरण के लिए लोहे का एक टुकड़ा ले लें तो उस टुकड़े के हर एक भाग में जो अणु हैं वो एक से हैं और वो जो अणु हैं उनमें सत्व रज और तम की निश्चित् मात्रा एक सी है।

(17) **प्रश्नः**—पदार्थ की उत्पत्ति (Creation) किसको कहते हैं?

उत्तरः—जब एक जैसी सूक्ष्म मूलभूत इकाईयाँ आपस में संयुक्त होती चली जाती हैं तो जो उन इकाईयों का एक विशाल समूह हमारे समाने आता है उसे ही हम उस पदार्थ का उत्पन्न होना मानते हैं। जैसे ईंटों को जोड़-जोड़ कर कमरा बनता है, लोहे के अणुओं को जोड़ जोड़ कर लोहा बनता है, सोने के अणुओं को जोड़-जोड़कर

सोना बनता है आदि। सीधा कहें तो सूक्ष्म परमाणुओं का आपस में विज्ञानपूर्वक संयुक्त हो जाना ही उस पदार्थ की उत्पत्ति है।

(18) **प्रश्नः**—पदार्थ का नाश (Destruction) किसे कहते हैं?

उत्तरः—जब पदार्थ की जो मूलभूत इकाईयाँ थीं वो आपस में एक-दूसरे से दूर हो जाएँ तो जो पदार्थ हमारी इन्द्रियों से ग्रहीत होता था वो अब नहीं हो रहा उसी को उस पदार्थ का नाश कहते हैं। जैसे मिट्टी का घड़ा बहुत समय तक घिसता-घिसता वापिस मिट्टी में लीन हो जाता है, कागज को जलाने से उसके अणुओं का भेदन हो जाता है आदि। सीधा कहें तो वह सूक्ष्म परमाणु जिनसे वो पदार्थ बना है, जब वो आपस में से दूर हो जाते हैं और अपनी मूल अवस्था में पहुँच जाते हैं उसी को हम पदार्थ का नष्ट होना कहते हैं।

(19) **प्रश्नः**—सृष्टि की उत्पत्ति किसे कहते हैं?

उत्तरः—जब मूल प्रकृति के परमाणु आपस में विज्ञान पूर्वक मिलते चले जाते हैं तो अनगिनत पदार्थों की उत्पत्ति होती चली जाती है। हम इसी को सृष्टि या ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति कहते हैं।

(20) **प्रश्नः**—सृष्टि का नाश या प्रलय किसको कहते हैं?

उत्तरः—जब सारी सृष्टि के परमाणु आपस में एक-दूसरे से दूर होते चले जाते हैं तो सारे पदार्थ का नाश होता जाता है और ऐसे ही सारी सृष्टि अपने मूल कारण प्रकृति में लीन हो जाती है। इसी को हम सृष्टि या ब्रह्माण्ड का नाश कहते हैं।

(21) **प्रश्नः**—हम बिना किसी प्रकृति के सृष्टि की उत्पत्ति क्यों नहीं मान सकते?

उत्तरः—क्योंकि कारण के बिना कार्य नहीं होता। ठीक ऐसे ही प्रकृत्ति कारण है और सृष्टि कार्य है।

(22) **प्रश्नः**—क्यों हम ऐसा क्यों न मान लें कि सृष्टि बिना प्रकृति के शून्य से ही पैदा हो गई? ऐसा मानने में क्या खराबी है?

उत्तरः—क्योंकि कोई भी पदार्थ शून्य से उत्पन्न नहीं हो सकता। भाव से ही भाव होता है, और अभाव से कभी भाव नहीं हो सकता।

(23) **प्रश्नः**—कोई भी वस्तु शून्य से क्यों नहीं बन सकती?

उत्तरः—क्योंकि कारण के बिना कार्य नहीं होता। अगर आप शून्य से उत्पत्ति मान भी लोगे तो आपको शून्य को कारण बोलना ही पड़ेगा और पदार्थ को उसका कार्य। लेकिन शून्य का अर्थ है Zero (Nothing) या कुछ भी नहीं। लेकिन शून्य कभी किसी का कारण नहीं होता। तो इसी कारण ऐसा मानना युक्त नहीं है।

(24) **प्रश्नः**—ऐसा मानना युक्त क्यों नहीं है? शून्य किसी का कारण क्यों नहीं होता?

उत्तरः—क्योंकि जो जैसा कारण होता है उसका कार्य भी वैसा होता है। जैसे लड्डू की सामग्री से लड्डू ही बनेंगे, खीर नहीं। आटे से रोटी ही बनेगी, दलिया नहीं। दूध से पनीर ही बनेगा, शहद नहीं। तो ऐसे ही शून्य से शून्य ही बनेगा पदार्थ नहीं।

(25) **प्रश्नः**—तो अब ये बतायें कि प्रकृति से ब्रह्माण्ड के ये सारे पदार्थ कैसे बन गए?

उत्तरः—पहले प्रकृति से पंचमहाभूत बनेः—आकाश, अग्नि, वायु, जल, पृथिवी।

(26) **प्रश्नः**—आकाश तत्व क्या है और प्रकृति से कैसे बना?

उत्तरः—आकाश बोलते हैं खाली स्थान को या शून्य को (Vaccumm) और पहले जब प्रकृति मूल अवस्था में थी तो सारे प्रकृति परमाणु पूरे ब्रह्माण्ड में भरे हुए थे। और जब वो आपस में जुड़ने लगे तो जहाँ से वो हटते चले गए वहाँ रिक्त स्थान बनता गया उसी को सर्वत्र हम आकाश तत्व कहते हैं।

(27) **प्रश्नः**—अग्नि तत्व क्या है और प्रकृति से कैसे बना?

उत्तरः—जिसके तत्त्व के कारण गर्मी या ऊष्मा होती है उसे ही अग्नि तत्व कहते हैं। जब प्रकृति के परमाणु आपस में जुड़ रहे थे तो उनमें आपस में घर्षण (रगड़ लगना) हुआ। तो आपस में रगड़ने से गर्मी पैदा होती है उसी तत्व को हम अग्नि तत्व कहते हैं।

(28) **प्रश्नः**—वायु तत्व क्या है और प्रकृति से कैसे बना?

उत्तरः—जिसके कारण पदार्थों में वातता (Gaseousness) आती है, वही वायु तत्व होता है। जब प्रकृति के परमाणु आपस में जुड़ते

चले गए तो जो पदार्थ बने वो तो धुआँदार ही थे क्योंकि उनके अणुओं में विरलापन था। जैसे कि Gasecus State में होता है। तो वही विरलापन वाला गुण ही वायु तत्व कहलाता है। तो कह सकते हैं कि सबसे पहले Gases ही अस्तित्व में आई।

(29) **प्रश्नः**—जल तत्व क्या है और प्रकृति से कैसे बना?
उत्तरः—जिसके कारण पदार्थों में तरलता आती है, वही जल तत्व होता है। जब प्रकृत्ति के परमाणु आपस में जुड़ते-जुड़ते उस अवस्था तक पहुँच जाते हैं जहाँ पर उनमें पहले की अपेक्षा घनत्व और बढ़ जाता है। तो तरलता होने लगती है तो उसी तत्व को हम जल तत्व कहते हैं।

(30) **प्रश्नः**—पृथिवी तत्व क्या है और प्रकृत्ति से कैसे बना?
उत्तरः—जिसके कारण पदार्थों में ठोसपन आता है, वही पृथिवी तत्व होता है। जब प्रकृति के परमाणु आपस में जुड़ते-जुड़ते उस अवस्था तक पहुँच जाते हैं जहाँ पर उनका घनत्व बहुत बढ़ जाता है तो एक दूसरे के बहुत पास होने के कारण पदार्थ ठोस (Solid) बन जाता है, तो यही पृथिवी तत्व का होना सिद्ध होता है।

(31) **प्रश्नः**—तो इन पंचतत्वों से सृष्टि कैसे बनी?
उत्तरः—परमाणुओं के आपस में बड़े स्तर पर जुड़ते जाने से यह सृष्टि बनी है। इसे हम आगे विस्तार से बताएंगे।

(32) **प्रश्नः**—सबसे पहले क्या हुआ?
उत्तरः—पूरे ब्रह्माण्ड के परमाुण आपस में एकत्रित होने लगे। ये सब विज्ञानपूर्वक जुड़ते चले गए। और बहुत ही बड़े स्तर पर ये संयुक्त होते गए।

(33) **प्रश्नः**—फिर संयुक्त होने के बाद क्या हुआ?
उत्तरः—तो बड़े स्तर पर जुड़ते जाने से बहुत से पदार्थों का बनना आरम्भ हो गया जिसमें (Gases (Helium, Neon, Hydrogen, Nitrogen etc.) और परमाणुओं के आपस में घर्षण (Friction) से बहुत ही अत्यधिक तापमान (Temperature) की वृद्धि हुई। उदाहरणः—जब दो Hydogen Atom आपस में मिलकर Helium का एक Atom बनाते हैं। तो ये तापमान लगभग 10000000000 C°

से भी ऊपर होता है। वैसे ही परमाणु बम्ब से भी इतना ही तापमान होता है जिसके कारण विस्फोट होता है और सब कुछ बर्बाद होता है। तो ठीक ऐसे ही छोटे कणों के आपस में जुड़ने से बहुत बड़ा भारी तापमान उत्पन्न होने लगा।

(34) **प्रश्नः**—तापमान के अधिक होने पर क्या हुआ?

उत्तरः—तो ऐसे ही ये पूरे ब्रह्माण्ड में एक विशाल आग का गोला तैयार हो गया। जो कि परमाणुओं के संयोग से बना था। और कणों के मिलने से गर्मी बढ़ी तो उसमें वैसे ही विस्फोट होने लगे जैसे कि परमाणु बम्ब द्वारा होते हैं, या सूर्य की सतह पर होते रहते हैं। जिसके कारण इस ब्रह्माण्ड के विशाल सूर्य में अग्नि प्रज्वलित हुई।

(35) **प्रश्नः**—यह जो विशाल सूर्य बना क्या इससे ही सारी सृष्टि बनी है?

उत्तरः—अवश्य इसी विशाल सूर्य से ही ब्रह्माण्ड में भ्रमण करने वाले पदार्थ बने।

(36) **प्रश्नः**—कैसे बने?

उत्तरः—फिर ईश्वर ने इसी विशाल सूर्य में एक बहुत ही बड़ा विशाल विस्फोट किया। इसी को हम Big Bang के नाम से जानते हैं।

(37) **प्रश्नः**—क्या ये सब ईश्वर के द्वारा ही किया गया?

उत्तरः—हाँ, ऐसा ही है। क्योंकि ईश्वर कण-कण में व्याप्त एक अखण्ड ब्रह्म चेतन तत्व है जिसमें ज्ञान और क्रिया है जिसके कारण वो परमाणुओं को विज्ञानपूर्वक आपस में संयुक्त कर पाता है। उदाहरण के लिए समुद्र के पानी का उदाहरण लें: जैसे समुद्र के पानी में लकड़ी के कुछ टुकड़े तैर रहे हों। तो कभी-कभी वो टुकड़े आपस में कभी मिल भी जाते हैं क्योंकि समुद्र का पानी उनमें व्याप्त है और वैसे ही वो अलग भी हो जाते हैं या एक दूसरे से दूर भी हो जाते हैं। पर ध्यान रहे पानी में ज्ञान या चेतना नहीं है। तो ये ईश्वर में ही है जिसके कारण वो परमाणुओं का संयोग और विभाग कर पाता है।

(38) **प्रश्नः**—विशाल सूर्य में विस्फोट होने के बाद क्या हुआ?

उत्तरः—विशाल सूर्य में विस्फोट तब हुआ जब वह हैमवर्ण हो चला था (नीले लाल रंग का) क्योंकि तापमान अत्यधिक हो गया। और उसके कुछ जो बड़े-बड़े टुकड़े थे दूर-दूर हो गए। जिनको हम तारे कहते हैं और कुछ जलते हुए टुकड़े ऐसे भी रहे जिनके आसपास छोटे टुकड़े भ्रमण करने लगे या परिक्रमा करने लगे। ये बड़े टुकड़ों को सूर्य कहा गया और छोटे टुकड़ों को ग्रह नक्षत्र कहा गया। और इस एक भाग को ही सौरमण्डल कहा जाता है। तो ऐसे असंख्य सौरमण्डलों का निर्माण हुआ।

(39) **प्रश्नः**—तो फिर ये ग्रहों की अग्नि क्यों बुझ गई? और हर सौरमण्डल में सूर्य अब भी क्यों तप रहे हैं?

उत्तरः—जैसे-जैसे छोटे टुकड़े दूर होते गए और बीच में अंतरिक्ष बनता गया। लेकिन परिक्रमा करने के कारण छोटे टुकड़ों की अग्नि जल्द शांत हो गई। जैसे मान लो कोई व्यक्ति लकड़ी के टुकड़े को आग लगाकर हाथ में लेकर दौड़े तो वायु के वेग से वो लकड़ी की आग शीघ्र ही समाप्त होगी। वैसे ही आग लकड़ियों के ढेर पर लगा कर रखोगे तो वो देर से शांत होगी। ठीक ऐसा ही कुछ सूर्य और नक्षत्रों के साथ हुआ। नक्षत्रों की अग्नि शांत हो गई क्योंकि वे तीव्र गति करते हैं। लेकिन सूर्य की गति धीमी है वो आकाश गंगा के केन्द्र के अपने से बड़े सूर्य की गति करता है। तो जब सूर्य की अग्नि शांत होगी प्रलय होगी। तो यही स्थिति ब्रह्माण्ड के सभी सौरमण्डलों की है।

(40) **प्रश्नः**—क्या सारे ब्रह्माण्ड के पदार्थ गतिशील हैं?

उत्तरः—नक्षत्रों के उपग्रह या चन्द्रमा नक्षत्रों की परिक्रमा करते हैं, पर अपनी कील पर भी घूमते हैं। वैसे ही नक्षत्र अपनी कील या अक्ष पर भी घूमते हैं और सूर्य की परिक्रमा भी करते हैं। सूर्य अपनी कील पर भी घूमता है और पूरे सौरमण्डल सहित आकाशगंगा के केन्द्र की परिक्रमा करता है। सारे पदार्थ गतिशील हैं और सबका आधार क्या है? वो है सर्वव्यापक निराकार चेतन ईश्वर जिसके कारण जड़ पदार्थ गतिशील हैं। अंतरिक्ष और पूरे ब्रह्माण्ड में यत्र तत्र बड़े धुआँ दार बादल भी होते हैं जिनको वेदों में वृत्रासुर या

महामेघ कहा जाता है। अंग्रेज़ी में इनको Nebula कहा जाता है। समय-समय पर इन महामेघों का छेदन इन्द्र (बिजली) के द्वारा होता ही रहता है।

साकार ईश्वर मानने वालों से प्रश्नः—

(1) साकार ईश्वर कौन है? उसको दिखाओ, किसी एक पर टिको, भटको नहीं, अगर कहो कि राम, और कृष्ण ईश्वर थे तो जो थे मर गये अर्थात् वह अब नहीं हैं तो वह ईश्वर कैसे हो सकते हैं? ईश्वर वही है जो सदैव विद्यमान हो, और सदैव विद्यमान निराकार ही हो सकता है, साकार नहीं।

(2) हमने तो साकार चीज को सदैव कभी नहीं देखा, साकार चीज नष्ट अवश्य होती है, आज तक कोई प्रमाण दो कि यह साकार ईश्वर है? साकार चीजें अवश्य नष्ट होती हैं।

(3) प्रकृति सदा से है। परमाणुओं के रूप में सदा मौजूद रहती है। जब सृष्टि रचना का समय आता है तो परमात्मा उन परमाणुओं को संयुक्त करता है, तब सृष्टि का निर्माण होता है। ईश्वर चेतन है और प्रकृति जड़ है। जड़ से चेतन की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

(4) निराकार ईश्वर का अनुभव होता है, हमारे पैर में किसी ने पत्थर मारा तो हमको पीड़ा हुई, हम उस पीड़ा का अनुभव कर सकते हैं, उसे देख नहीं सकते। यह साधारण ज्ञान रखने वाले मनुष्य नहीं समझ सकते दूसरी बात, निराकार परमात्मा का ही ध्यान हो सकता है, साकार का नहीं।

मन का निर्विषय हो जाना ही ध्यान है, इसके लिए बाह्य जगत् से अर्थात् साकार भौतिक पदार्थों से मन को हटाकर आंखे बन्द कर उसे परमज्योति को हम अपने हृदय में अनुभव कर सकते हैं।

साकार में कभी ध्यान लग ही नहीं सकता। साकार में मन उसके हाथ, नाक, कान रूप आदि में भटकता रहेगा, यदि साकार वस्तुओं में ध्यान लगता तो सारे मनुष्यों का लग जाता क्योंकि मनुष्य पूरे दिन पुत्र पुत्रियों, परिवार को देखता है, परन्तु वह दुःखी ही रहता है। परम शान्ति उसे तब अनुभव होती है जब एकान्त स्थान में आंखें बन्द कर ध्यान लगाता है। और

फिर हमने तो आज तक मूर्त्ति पूजकों को ध्यान करते हुए देखा नहीं, वे तो मन्दिर में जाते हैं और क्षण भर हाथ जोड़ते हैं और चल देते हैं। अगर मूर्त्ति में ध्यान लगता तो मन्दिर में जाकर लोग आंखें बन्द क्यों कर लेते हैं, उन्हें आंखें खोलकर मूर्त्ति को ही देखना चाहिए। पर ऐसा होता नहीं क्योंकि वह परमात्मा आत्मा का विषय है, बाहर का नहीं।

एक बात और, जब मूर्त्तिपूजक या साकार को मानने वाले मन्दिर से बाहर आ जाते हैं तब वे खुलकर पाप करते है; क्योंकि उनकी ये भावना होती है कि अब हमें कोई नहीं देख रहा, क्योंकि उनके अनुसार तो ईश्वर मन्दिर में बैठा है और हर जगह नहीं, परन्तु ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापक मानने वाले कहीं भी कोई पाप नहीं कर सकते, क्योंकि वह जानते हैं कि परमात्मा सर्वत्र मौजूद है, हमारी सब गतिविधियों को जातना है। अतः वे पाप करने में लज्जा महसूस करेंगे।

॥ ओ३म् ॥
निमन्त्रण
आर्य समाज मयूर विहार-1
के वार्षिक उत्सव के सुअवसर पर
गोविन्दराम हासानन्द
आपको सादर आमंत्रित करते हैं
अपने नवीनतम प्रकाशन
प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' कृत
आनन्द रस-धारा
(महात्मा आनन्द स्वामीजी की जीवनी)
के लोकार्पण पर
स्थल : आर्य समाज मयूर विहार-1
पॉकेट-IV, दिल्ली-110091
तिथि : 24 अप्रैल, 2016
समय : दोपहर 1.00 बजे
निवेदक : अजय कुमार
गोविन्दराम हासानन्द
4408, नई सड़क, दिल्ली-110006
दूरभाष : 23977216, 9810064035

2015 में प्रकाशित उपयोगी साहित्य

ऋग्वेद भाष्य (चार भागों में सम्पूर्ण) **स्वामी दयानन्द सरस्वती**
रु. 2800.00

प्रथम बार कम्प्यूटर द्वारा मुद्रित शुद्धतम् सामग्री, नयनाभिराम डिजिटल छपाई, आकर्षक आवरण, उत्तम कागज, मजबूत जिल्द, सुन्दर टाईप। कुल 5200 पृष्ठों में पूर्ण, शब्दार्थ व मन्त्रानुक्रमणिका सहित।

The Truth About the Vedas
Dr. Bhawanilal Bhartiya **Rs. 60.00**

English translation of 'Vedic Kathayon Ka Sach', translated in English by Pt. Satyaprakash Beegoo, Arya Upadeshak, Mauritius. Let us read in this book how stories of Vedas describe the truth about nature and human life.

What is Veda? : Dr. Tulsiram **Rs. 250.00**

This Book is a self-contained Introduction to the author's translation of all the four Vedas, already published in eight volumes.

गऊ माता : विश्व की प्राणदाता-मेहता जैमिनीजी		
	अनुवादः प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	**70.00**
स्वास्थ्य के शत्रु अण्डे व मांस	**स्वामी जगदीश्वरानन्द**	**15.00**
रामायण की विशेष शिक्षाएँ	**स्वामी ब्रह्ममुनि**	**30.00**
महाभारत की विशेष शिक्षाएँ	**स्वामी ब्रह्ममुनि**	**50.00**
कैसे बची संस्कृति हमारी?	**प्रो. रामविचार**	**20.00**
वैदिक मान्यताएँ	**प्रो. रामविचार**	**25.00**
व्यवहारभानु प्रश्नोत्तरी	**कु. कञ्चन आर्या**	**35.00**
एक वाक्य में समाधान	**मदन रहेजा**	**50.00**

2015 में पुनः प्रकाशित साहित्य

स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (दो भागों में, 2350 पृष्ठ)		**2500.00**
शंका समाधान	**पं. रामचन्द्र देहलवी**	**8.00**
स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द	**डॉ. भवानीलाल भारतीय**	**150.00**
वेद प्रवचन	**पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय**	**160.00**
ऋषि दयानन्द के सर्वश्रेष्ठ प्रवचन	**सं. डॉ. भवानीलाल भारतीय**	**75.00**
सत्संग भजनावली	**सं. डॉ. दिलीप वेदालंकार**	**125.00**
पथ की पहचान	**आ.चन्द्रशेखर शास्त्री**	**35.00**
Back to the Vedas	**Madan Raheja**	**Rs. 150.00**

ikfIr LFkku% fo t ; dqekj xkfoUnjke gk l kuUn

4408] ubZ lMd] fnYyh&6] nwjHkk"k 23977216] 65360255

Email: ajayarya16@gmail.com Web: www.vedicbooks.com

2016 के आगामी प्रकाशन

आनन्द रस-धारा : प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

महात्मा आनन्द स्वामी वेदभक्त, ऋषिभक्त, प्रभुभक्त, देशभक्त, जातिभक्त और लोकसेवक थे। उनके इस जीवन चरित से पाठकों को सत्प्रेरणाएँ, उर्जा, मानसिक शान्ति तथा आध्यात्मिक भोजन मिलेगा।

यज्ञ-आचार संहिता : मदन रहेजा

यज्ञ का पूर्ण लाभ हमें तभी मिलेगा जब हम सभी याज्ञिक क्रियाओं को विधियुक्त व शास्त्रीय निर्देशानुसार करेंगे। यज्ञ-विधि के साथ-साथ यज्ञ से सम्बन्धित लगभग सभी सम्भावित प्रश्नों पर भी लेखक ने गहराई से विचार करते हुए ज्ञातव्य तथ्यों से पाठकों को सरलतापूर्वक अवगत कराया है।

The Principal Upanishads

by Svami Satya Prakash Sarasvati

Lucid English translation all of Eleven Upanishads by a great vedic scholar and Sanyasi Svami Satyaprakash Sarasvati. This translation will clarify many doubts regarding the principles of the Upanishads and will show a new path to the admirers and readers of the Upanishads.

Mystery of Death by Madan Raheja

We fear from our death, this fear of death takes away all our happiness and joys. There are many different kinds of fear like fear of separating from our loved ones, relatives, friends forever, fear of loosing our hardearned belongings, etc. The most important cause of fear of death is 'Ignorance'. The author has discussed this 'Ignorance' in this book.

बाल शंका समाधान : श्री मदन रहेजा

आज माता-पिता अपने काम-काज में व्यस्त रहते हैं, इसलिये बच्चों को सही मार्ग दर्शन की अत्याधिक आवश्यकता है। इस पुस्तक द्वारा बच्चों को ही नहीं अपितु उनके माता-पिता तथा सगे-संबंधियों को भी सत्य सनातन वैदिक धर्म का समान्य ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

वेदप्रकाश